ISSN 2231-5187

साखी 36

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक
Post Off. Regd. No-G-2/VSI (E)-015/2021-22

रहीम अंक

सम्पादक: सदानन्द शाही

हद्द चले सो मानवा बेहद चले सो साध।
हद बेहद दोऊ तजे ताकर मता अगाध।।

कबीर

अब रहीम मुसकिल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलें न राम।।

रहीम

ISSN 2231-5187

साखी 36

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक
Post Off. Regd. No-G-2/VSI (E)-015/2021-22

अंक : 36
मास : दिसम्बर 2021
ISSN : 2231-5187

पूर्वा

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

संस्थापक : केदारनाथ सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही

www.premchandsahityasansthan.com

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक मण्डल : पी. एन. सिंह/अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही
सहायक सम्पादक : डॉली मेघनानी

प्रतिनिधि :
भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 (**गोरखपुर**)
कमल कुमार, मो. 7003022681 (**कोलकाता**)
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 (**गाजीपुर**)
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 (**जयपुर**)
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 (**आगरा**)
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 (**इलाहाबाद**)
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 (**बिलासपुर**)
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 (**गया**)

आवरण चित्र-1 : अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना भगवान विष्णु की आराधना करते हुए।
स्रोत—भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
आवरण चित्र-2 : अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना का पोट्रेट। कलाकार—हाशिम (जहाँगीर काल, 1627)।
स्रोत—फ्रियर गैलरी ऑफ आर्ट एण्ड आर्थर एम. सेक्लर गैलरी, स्मिथ सोनियन इंस्ट्यूशन वाशिंगन डी.सी.

सज्जा : राहुल कुमार शॉ

प्रसार : विश्वमौलि, मो. 9450209580
इन्दुशेखर त्रिपाठी, मो. 7376831000

अक्षर संयोजन : श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी
मुद्रक : मित्तल आफसेट, वाराणसी

सहयोग राशि :

यह अंक	:	**अस्सी रुपये मात्र**
सदस्यता	:	**तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) तीन हजार रुपये मात्र**
संस्थाओं के लिए	:	**पाँच सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) पाँच हजार रुपये मात्र**
विदेश के लिए	:	**चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस अंकों के लिए) पाँच सौ डालर मात्र**

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARB0LANKAX (0 as Zero)** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

सम्पादकीय सम्पर्क
क
बी-2, सत्येन्द्र गुप्त नगर, लंका
वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 09450091420, 9616393771

ईमेल
saakhee2000@gmail.com
वेवसाइट
www.premchandsahityasansthan.com

(वाद क्षेत्र : वाराणसी न्यायालय)

(राजेश कुमार मल्ल, सचिव-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. द्वारा प्रकाशित)
www.notnul.com पर सभी अंक उपलब्ध

इस अंक में

सम्पादकीय

रहिमन धागा प्रेम का... सदानन्द शाही 05

किताबनामा

अपने-अपने रहीम : अंग्रेजी, फारसी और संस्कृत के रहीम हरीश त्रिवेदी 09
अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना : अहले कलम-ओ-सैफ़ समीर कुमार पाठक 17
रहीम सुजीत कुमार सिंह 39

परिचय एवं लेख

रहीम : महान सेनापति, महान लेखक, महान कवि राहुल सांकृत्यायन 47
हमारे सांस्कृतिक समन्वय का एक प्रतीक : रहीम शमशेर बहादुर सिंह 55
रहीम : एक अद्‌भुत व्यक्तित्व विद्यानिवास मिश्र 60
रहीम का परिचय सुरेन्द्रनाथ तिवारी 72
ख़ानख़ाना की जीवन-सन्ध्या समर बहादुर सिंह 78
रहीम की रचनाएँ सत्यप्रकाश मिश्र 91
रहीम की उदात्त भाव-भूमि नामवर सिंह 97
रहीम : संतुलन के रचनाकार सत्यप्रकाश मिश्र 100
रहीम की जीवन-दृष्टि हरीश त्रिवेदी 106
लोक और शास्त्र में कबीर, रहीम व तुलसी सदानन्द शाही 120
थके-माँदे योद्धाओं का दृष्टि-विलास (सन्दर्भ : रहीम रचित 'नगर शोभा') अनामिका 126
रहीम के बरवै (ले. रूपर्ट स्नैल) अनु. रवि कुमार राय एवं अंशु प्रिया 135

रहीम और रामायण	उदय शंकर दुबे	143
मध्यकाल और रहीम का संस्कृत प्रेम	मधुप कुमार	150
रहीम के प्रेम का लावण्य	दीपा गुप्ता	171
रहिमन प्रीति सराहिये	उमेश प्रसाद सिंह	176
रहीम का देश	विजय बहादुर सिंह	186

रचना खण्ड

रहीम रचनावली से पच्चीस दोहे	195
बरवै नायिका-भेद से लिये गये बरवै	202
श्रृंगार सोरठा	208
मदनाष्टक	210
अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना के दो पद	214
सहयोगी	216

●

रहिमन धागा प्रेम का...

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भले ही रहीम को भक्तिकाल के फुटकर कवियों में शुमार किया हो लेकिन वे उनकी कविता में 'भारतीय प्रेम-जीवन की सच्ची झलक' देखते हैं। आचार्य शुक्ल के इस वाक्य को रहीम के फ़ारसी कलाम में दिये आत्म वक्तव्य ''मैं सिर से पाँव तक मुहब्बत के जाल में फँसा हुआ हूँ''[1] से जोड़कर पढ़ा जाना चाहिए। रहीम की कविता हमें यह भी बताती है कि वे समग्र जीवन से प्यार करने वाले व्यक्ति थे। उनका प्रेम वैयक्तिक भी है और सामाजिक भी। रहीम का लोक में सबसे ज्यादा प्रचलित दोहा इस बात की गवाही देता है—

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से पुनि ना जुरै, जुरे गाँठि परि जाय।।

---

1. शिव सिंह सरोज में रहीम का फ़ारसी कलाम उद्धृत है—

शुमार शौक न दानिस्ता अम कि ता चन्द ऊपरी अस्त।
जुज़ ई कदर कि दाम सख़्त आजूमन्द अस्त।।
न दाना दनाम व नै दाम ई क़दर दानम।
के पाय ता बसरम हर चे हस्त दर बंद अस्त।।

मैं यह नहीं बता सकता कि मेरी मुहब्बत का जोश कहाँ तक बुलन्द है, इतना जानता हूँ कि मुहब्बत के जाल में फँसा हुआ हूँ। मैं इतनी समझ-बूझ नहीं रखता कि दाना और जाल को पहचान सकूँ इतना जानता हूँ कि मैं सिर से पाँव तक मुहब्बत के जाल में फँसा हुआ हूँ।

यह बात जितनी निजी संबंधों पर लागू होती है उतनी ही सामाजिक संबंधों पर भी। रहीम से कुछ पहले कबीर अपनी कविता में जो ताना-बाना रच आये थे, यह हर उस धागे को सँभाल कर रखने की बात है। इतिहास में ऐसे दौर आते रहे हैं और आगे भी आते रहेंगे जब मनुष्य ही मनुष्य का दुश्मन हो जाता है। दूसरे की उपस्थिति ही नरक है, 'The other is hell' जैसे मुहावरे यों ही नहीं पैदा हो जाते हैं। हम ऐसे ही मुहाविरों की छाया में जीने को अभिशप्त हो गये हैं। अन्तःकरण का आयतन इतना संक्षिप्त हो गया है कि कोई हमनवाँ बचा ही नहीं है। क्या स्वजन और क्या परिजन सब धीरे-धीरे किसी अंधेरी सुरंग के गिरफ्तार होते जा रहे हैं। इस गिरफ़्तारी में हम सुजनों को छोड़ कर खुशी-खुशी अपने-अपने अजनबी बनते जा रहे हैं। ऐसे माहौल में रहीम की मोहक आवाज़ एक सुकून की तरह कानों में पड़ती है– *'रूठे सुजन मनाइए जो रूठे सौ बार / रहिमन पुनि पुनि पोइए टूटे मुक्ताहार'।* और बताती रही कि हमें अकेलेपन के बीहड़ों से बाहर निकलकर मोतियों की माला फिर से गूँथनी होगी। कबीर की चादर का ताना-बाना उलझ गया है, उसे फिर से ठीक करना होगा।

निजी जीवन में और सामाजिक जीवन में बार-बार ऐसे अवसर आते हैं जब अनायास ही रहीम याद आते हैं। रहीम जिस भाषा में और जिस अंदाज में भारतीय जनमानस के चित्त में बसे हुए हैं कि उन्हें हम उसी सहजता से याद करते हैं जैसे कबीर और तुलसी को। हमारी सामूहिक चित्ति में ऐसे दीमक लग गये हैं जो सहजता को चाटे जा रहे हैं। रहीम जैसे कवि की याद अपने भीतर उसी सहजता को फिर से बहाल करना है। यों भी महामारी और तालाबंदी के बुरे दौर में रहीम याद आते रहे–रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर / जब नीके दिन आइहें बनत न लगिहें देर।

दिनन के फेर के दौर में चुप बैठे नीके दिनों का इंतज़ार करते रहे। इस इंतज़ार में रहीम हमारे साथ-साथ रहे। सनद रहे कि हमारे साथ रहीम रहे, खानेखाना रहीम नहीं, दर-दर फिरे वाले रहीम। जैसे रहीम को चित्रकूट के राम याद आते रहे वैसे ही 'चित्रकूट में रमि रहे, / रहिम न अवध नरेस / जेहि पर विपदा परत है / सो आवत एहि देस।' यह भी खूब है कि हमारी हिन्दी रहीम को, बस कवि रहीम को जानती है, खानेखाना की नहीं।

यह अंक

साखी का यह अंक महज़ एक संयोग की देन है। आगा खाँ फाउंडेशन की पहल पर रहीम पर क्रमशः अंग्रेजी और हिन्दी में दो किताबें छपीं। पहली किताब 'Celebrating Abdur Rahim Khan-I-Khanan' Editor & Designer **Shakeel Hossain** तथा Co-Editor & Research Manager **Deeti Roy** (2017) और दूसरी 'अब्दुर्रहीम ख़ानेख़ाना : काव्य सौन्दर्य और सार्थकता', सम्पादक : **हरीश त्रिवेदी** (2019) थी। अंग्रेजी और हिन्दी किताबें पूरी तरह अलग-अलग हैं। आगा खाँ फ़ाउंडेशन ने जब उनके मूर्त स्मारक मक़बरे के संरक्षण का काम हाथ में लिया तो उनकी अमूर्त विरासत को सँभालने के लिए इन किताबों का प्रकाशन किया गया। बहुत आसान था कि अंग्रेज़ी लेखों का हिन्दी अनुवाद

कराकर हिन्दी किताब निकाल दी जाय लेकिन ऐसा करने के बजाय हिन्दी में रहीम पर किताब तैयार करने की जिम्मेदारी हमारे समय के महत्वपूर्ण साहित्य चिन्तक हरीश त्रिवेदी को दी गई जिसे उन्होंने बखूबी अंजाम दिया। ये दोनों किताबें मिलकर हिन्दी-विमर्श में रहीम की पुनर्वापसी करती प्रतीत हुईं। इसलिए हम साखी में इन किताबों की समीक्षा प्रकाशित करना चाहते थे। हिन्दी किताब की प्रतियाँ उपलब्ध थीं। इसलिए समीर कुमार पाठक और सुजीत कुमार सिंह से हिन्दी किताब पर समीक्षा लेख लिखने का आग्रह किया। हमने कोशिश की कि अंग्रेज़ी किताब की प्रतियाँ मिल जायँ तो उसकी समीक्षा भी करा ली जाय। नहीं मिली। फिर सोचा गया कि अंग्रेज़ी किताब की समीक्षा कहीं किसी ने की होगी तो उसका अनुवाद दे दिया जायेगा। लेकिन वह भी हम हासिल नहीं कर सके। इस बीच हमारे अनुरोध पर प्रो. हरीश त्रिवेदी ने 'अपने-अपने रहीम', 'अंग्रेजी फारसी और संस्कृत के रहीम' शीर्षक से अंग्रेजी किताब पर टिप्पणी लिखी और आगा खाँ फाउण्डेशन के रहीम प्रोजेक्ट का भी परिचय दिया। इस बीच समीर और सुजीत से रहीम पर चर्चा होती रही। इसी चर्चा क्रम में ख़्याल आया कि क्यों न रहीम को ठीक से याद कर लिया जाय। और इस अंक की योजना बनी।

हिन्दी में रहीम और उनके साहित्य के अध्ययन की समृद्ध परम्परा रही है। हमने सिर्फ़ उस परम्परा से बानगी के तौर पर कुछ मोती चुन लिए। जिनमें राहुल सांकृत्यायन, शमशेरबहादुर सिंह, विद्यानिवास मिश्र, नामवर सिंह, सुरेन्द्रनाथ तिवारी, समर बहादुर सिंह, सत्यप्रकाश मिश्र के लेखों को शामिल किया गया है। कुछ लेख समीक्ष्य किताबों से भी लिए गये हैं। अनामिका, हरीश त्रिवेदी, उदय शंकर दुबे, सदानन्द शाही के लेख हिन्दी किताब से साभार लिए गए हैं। (जिनके सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं) रूपर्ट स्नैल के लेख 'Breifly put : Rahim's Barvai Couplets' का अनुवाद अंग्रेजी किताब की बानगी के तौर पर दे रहे हैं। श्री विजय बहादुर सिंह ने हमारे अनुरोध पर 'रहीम का देश' शीर्षक लेख लिखा। दीपा गुप्ता ने न केवल 'रहीम का लावण्य प्रेम' शीर्षक लेख लिखा बल्कि रचनाखंड में संकलित कविताओं का अर्थ भी किया। इसी तरह उमेश प्रसाद सिंह ने 'रहिमन प्रीत सराहिए' लेख लिखा। सभी लेखों में रहीम को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से देखने व समझने का प्रयास किया गया है। लेकिन आप पायेंगे कि सभी मिलकर रहीम की एक समग्र छवि निर्मित कर रहे हैं। आशा है कि साखी के इस अंक से रहीम के व्यक्तित्व और उनकी कविता को समझने में पाठकों को सहायता मिलेगी।

सदानंद शाही